जैन धर्म का सार (जैन एकता के सूत्र)

—आचार्य कनकनन्दी

(राग : रघुपति राघव.....गजानना श्री गणराया..... सायोनारा.....
छोटी-छोटी गैया.....ऐ मेरे वतन.....)

जैन एकता करणीय..... वैश्विक शान्ति वरणीय।
राग-द्वेष त्यजनीय..... सत्य समता भजनीय।।

भेद-विज्ञान करणीय..... भेद-भाव न भजनीय।
अनेकान्त ही वरणीय..... एकता भाव पालनीय।।

रत्नत्रय पालनीय.....मोक्ष पथे गमनीय।
आत्म विकास करणीय..... सुख-शान्ति वरणीय।।

पंचव्रत पालनीय..... सर्वोदय करणीय।
सप्त व्यसन त्यजनीय..... स्वास्थ्य-सुख भजनीय।।

शाकाहार करणीय..... अहिंसा धर्म पालनीय।
अपरिग्रह पालनीय..... पर्यावरण रक्षा करणीय।।

उदार भाव भजनीय..... भेद-भाव त्यजनीय।
अनेकान्त पालनीय..... विश्व कुटुम्ब भजनीय।।

द्रव्य ज्ञान करणीय..... शोध-ज्ञान वरणीय।
गुणस्थान स्मरणीय..... आध्यात्मिक भजनीय।।

ध्यान-अध्ययन करणीय..... आत्मज्ञान वरणीय।
विभाव भाव वर्जनीय/(त्यजनीय)..... मोक्ष प्राप्ति करणीय।।

शुद्ध स्वरूप वरणीय..... शाश्वत/(मोक्ष)सुख सेवनीय।
जैन धर्म सार यह..... 'कनकनन्दी 'को अतिप्रिय।।

Scanned by TapScanner

भगवान् महावीर का विश्व को दिव्य सन्देश

– आचार्य कनकनन्दी

(राग :- सुनो-सुनो हे दुनियाँ वालों.....)

सुनो-सुनो ऐ दुनिया वालों, महावीर का दिव्य संदेश।
उसका निश्चय विकास होगा, जो अपनाएगा यह संदेश।।

अनेकान्त है दिव्य संदेश, उदारवादी बने मानव।
सापेक्ष दृष्टि अपनाकर, सापेक्ष कथन करें मानव।।

इससे दूर संकीर्णता होगी, कट्टरता भी गायब होगी।
पक्षपात भी दूर होगा, सर्व समस्या शान्त होगी।।

अहिंसा से स्व पर विश्व रक्षा, पर्यावरण की सुरक्षा होगी।
कषाय भाव मन में न हो, यह अन्तरंग अहिंसा होगी।।

इससे तनाव संक्लेश भाव, लड़ाई झगड़ा दूर भी होंगे।
गृह कलह से आतंकवाद, युद्ध महायुद्ध दूर भी होंगे।

तृष्णा की कमी संतोष वृत्ति से, अपरिग्रह का होगा विकास
मर्यादित में गृहस्थ पाले, सम्पूर्ण पाले साधु संन्यास।।

प्रकृति शोषण कम भी होगा, यान वाहन भी कम ही होंगे।
कल-कारखाने भी कम होंगे, अपरिग्रह जब हम पालेंगे।।

पर्यावरण की सुरक्षा होगी, प्रदूषणों में कमी आयेगी।
ग्लोबल वॉर्मिंग विषम दृष्टि, रोग दुर्घटना में कमी आयेगी।।

आध्यात्मिकता से अन्तरदृष्टि, समता भाव से होगी प्रवृत्ति।
इससे होगी आत्मिक शान्ति, सत्य सहिष्णुता व संतोष वृत्ति।।

पवित्रता व सहज वृत्ति, जिससे फैलेगी विश्व में शान्ति।
अन्त में मिलेगी मुक्ति की प्राप्ति, महावीर सम मिलेगी शान्ति।।

'कनकनन्दी' भी भावना भाये, विश्व मानव यह अपनायें।
विश्व में सर्वत्र शान्ति प्रसारे, अन्त में आत्मिक शांति पाये।।

'जैना' द्वारा यह दिव्य संदेश, विश्व कल्याणार्थ हो प्रसारा।
मंगल कामना विश्व हेतु है, ब्रह्माण्ड में हो मंगल सारा।।

यह कविता "JAINA" अमरीका (USA) द्वारा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित की गई है

हमारे गुरुवर जग से निराले

आर्यिका सुवत्सलमती

(राग :- ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला.....)

परम उच्च भावों वाले हैं कनकनन्दी जी गुरुवर।
गुरुवर हमारे ये जग से निराले-2 ।।ध्रुव।।परम उच्च.....

बालकवत् है इनकी चर्या, मन से है निष्कलंक भैया।
भोले सरल स्वभावी है, ये गुरुवर हमारे।।1।।परम उच्च.....

व्यर्थ प्रपंचों में नहीं पड़ते, सतत चिन्तन/(ध्यान)में निमग्न रहते।
आध्यात्म प्रेमी योगी है, ये गुरुवर हमारे।।2।।परम उच्च.....

अहंकार इन्हें छू नहीं पाता, ख्याति पूजा लाभ इन्हें नहीं भाता।
मौन एकान्त प्रेमी है, ये गुरुवर हमारे।।3।।परम उच्च.....

आत्म स्वभाव में लीन रहते, विभाव भावों में माध्यस्थ रहते।
सत्य साम्य सुखामृत पीवे रे, ये गुरुवर हमारे।।4।।परम उच्च..

गुण-दोषों की समीक्षा करते, खोटे भावों से बच के रहते।
अनासक्त सूरीश्वर/(यतीश्वर)है, ये गुरुवर हमारे।।5।।परम उच्च....

साधक का गुण अनुमोदन/(नित निरीक्षण)करते,
उपगूहन व स्थितिकरण करते।

वात्सल्य भाव से लबालब है, ये गुरुवर हमारे।।6।।परम उच्च.....

"मेरी प्रतिज्ञा"

(आचार्य कनकनन्दी की प्रतिज्ञा एवं साधना तथा संघ के नियम)

– आचार्य कनकनन्दी

(चाल : तेरे प्यार का आसरा.....)

एकान्त -मौन में मैं रहना चाहता हूँ..... स्वात्मा की साधना सदा चाहता हूँ.....
संकल्प-विकल्पों से दूर रहता हूँ.....राग-द्वेष-मोह को मैं दूर करता हूँ.....(1)

त्यागे हुए विषयों को नहीं चाहता हूँ....गृहस्थों के विषयों से दूर रहता हूँ....
./(गृहस्थावस्था की चर्चा नहीं करता हूँ.....)

तन-मन-वचन से दूर रहता हूँ.....कृत-कारित-अनुमत से दूर रहता हूँ.....(2)

Scanned by TapScanner

धन-जन-मान व ख्याति-पूजा-लाभ से.....संकीर्ण पंथ-मत-जाति व भाषा से.....
तेरा-मेरा भेद भाव घृणा-ईर्ष्या से.....दूर ही रहता हूँ स्वार्थ व लोभ से.....(3)
दिखावा-आडम्बर व प्रतिस्पर्द्धा से....निन्दा-चुगली व वाद-विवादों से.....
दूसरों के अनादर-अहित भावों से.....दूर ही रहता हूँ फूट व लूट से.....(4)
चन्दा-चिट्ठा-याचना संग्रह वृत्ति से.....भौतिक निर्माण व लन्द-फन्दों से.....
दबाव-प्रलोभन-ढोंग-पाखण्डों से.....'कनक' दूर है अनात्म कामों से.....(5)
साहित्य प्रकाशन व संगोष्ठी-शिविर..... देश-विदेशों में धर्म के प्रचार.....
शिष्य-भक्तों द्वारा स्वेच्छा से होते हैं..... मुझसे आशीर्वाद-ज्ञान वे लेते हैं.....(6)
साधु(1981)बनते ही नियम लिया हूँ.....गृह को त्यागकर मुनित्व पाया हूँ.....
आध्यात्म साधना में आगे ही बढ़ूँगा.....आध्यात्म विकास/
(अनुभव/विशुद्धि)सतत करूँगा.....(7)

आचार्य श्री कनकनन्दी की आध्यात्मिक यात्रा व गुरु

ब्रह्मचर्य (1976), क्षुल्लक (1978), साधु(1981), उपाध्याय (1982), आचार्य पदवी प्रदाता(1996)-आचार्य कुन्थुसागर जी गुरुदेव(शिक्षा-दीक्षा दाता)(सान्निध्य 18 वर्ष)
मार्ग दर्शक-प्रोत्साहक-शिक्षादाता-आचार्य विमलसागरजी, गुरुदेव, आचार्य विद्यानन्दजी, आचार्य भरतसागर जी।(सान्निध्य 6-7 वर्ष)
मुनिदीक्षा-(1981) श्रवणबेलगोला-सहस्राब्दी महोत्सव में आचार्य विमलसागर जी, आचार्य विद्यानन्दजी आदि प्राय: 200 साधु-साध्वी तथा लाखों श्रद्धालुओं के मध्य में।
सिद्धान्तचक्रवर्ती-(1985)आचार्य देशभूषण जी एवं आचार्य कुन्थुसागर जी द्वारा।
आचार्य-पद(1996)-पदवी प्रदाता आचार्य कुन्थुसागर जी तथा संस्कार दाता आचार्य अभिनन्दन सागर जी तथा सानिध्य आचार्य पद्मनदी जी एवं प्राय: 50-60 साधु-साध्वी की उपस्थिति में।
अध्यापन - अभी तक स्व-संघ, पर संघ के प्राय: 250-300 साधु-साध्वी, उपाध्याय, आचार्य तथा लाखों विद्यार्थी, विद्वान- प्रोफेसर, वैज्ञानिकों को ज्ञानदान, देश-विदेशों के शिष्यों द्वारा देश-विदेशों में धर्म प्रचार।

सौजन्य : पुष्पादेवी पत्नि स्व. धनराजजी सेठ (चीतरी), शिल्पा-भरतकुमार, टीना-मणिभद्र (पुत्रवधु-पुत्र)

Scanned by TapScanner